Visit Dwarkadheeshvastu.com For
FREE Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos
Educational Books, Educational Videos, Wallpapers
****
All Music is also available in CD format. CD Cover can also be print with your Firm Name
****
We also provide this whole Music and Data in PENDRIVE and EXTERNAL HARD DISK.
Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

****

MANGALA GAURI PAATH

(Hindi)

****

मंगला गौरी पाठ के लाभ

- विवाह शीघ्र होने के लिए और पति पत्नी में मेल मिलाप बनाने के लिए।
- मंगलिक शनिचरी दोष हटाने के लिए सुहाग भाग्य संतान सुख के लिए।
- मकान वाहन खरीदने बेचने के लिए।

इस पुस्तक को पढ़ो और दान भी करो।
साथ ही मंगला गौरी का अनुष्ठान भी रखो।

पूरी सफलता देने वाला

मंगला गौरी पाठ

अब तक हजारों बालकों का विवाह इस उपाय से हो चुका है।

प्रथम संस्करण सन् 1994 में छपा
दूसरा संस्करण सन् 1998 में छपा
तीसरा संस्करण सन् 2000 में छपा
चौथा संस्करण सन् 2001 में छपा
यह पांचवां संस्करण सन् 2002 में छपा
पुनः प्रकाशन का अधिकार सुरक्षित है।

आरती श्री गणपति जी की

टेक - करो मेरे गणपति जी सिद्ध काम ॥

१. शंकर सुवन भवानी नन्दन।
मेरी बार बार प्रणाम ॥
करो मेरे गणपति जी सिद्ध काम ॥

२ ऋद्धि सिद्धि अंग विराजे।
विघ्न हरण धन धाम ॥
करो मेरे गणपति जी सिद्ध काम ॥

३ विद्या बुद्धि भगती दीजो।
दीजो मन विश्राम॥
करो मेरे गणपति जी सिद्ध काम।
४ मांगत हैं हम हाथ जोड़कर।
दर्शन देओ घनश्याम॥
करो मेरे गणपति जी सिद्ध काम॥

!! इति आरती गणपति जी की !!

मंगला गौरी पाठ प्रारम्भः

!! दोहा !!

कलि काल कराल में-जनहित उतरी आय।
पाप नशावै सुख करै-मंगला गौरी मांय॥
सात समुद्र भू भाग में-आठवीं वैतरणी धार।
भगतों की नाव लगावती - मंगला गौरी पार॥
सतयुग में उत्पन्न हुई - त्रेता मर्यादा पाली।
द्वापर योग माया बनी-कलियुग मंगला काली॥

मंगला गौरी ममता मई-माया मोह विस्तारी।
धरणी गगन पाताल में-मंगला मां प्रचारी।।
स्वर व्यंजन बिन्दु मात्रा-शब्द भेद प्रमाण।
कंठ तालु जिहवा अधर-मंगला गौरी ज्ञान।।
स्थावर जंगम चर अचर-सृष्टि की जड़ मूल।
विश्व का संचालन करै-मंगला गौरी अनुकूल।।
दूध दही घृत मधु-मोदक मोहन भोग।
प्रेम सहित अर्पण करै-मंगला गौरी योग।।

स्वर्ण सिंहासन राजती-चंवर व्यंजन सेवकाई।
अष्ट लड़ी सिर मुकुट धर-मंगला गौरी हर्षाई।।

चौपाई पाठ

जय जय श्री मंगला गौरी।
तुम्हें मनावैं चन्द्रमा सौरी।।
भूमि सुत मंगल की पुत्री।
गगन फोड़कर स्वर्ग से उतरी ।।
कैलाश हिमालय घूमती फिरती।
गुण सुगन्ध औषध में भरती।।

8

पाताल लोक की बनी निवासी।
नाग नागनी दास अरू दासी।।
मणी कणी नग रत्न सुहासी।
हीरे पन्ने चमक प्रकाशी।।
कानन कुन्डल सजे सुख राशी।
लाल लालड़ी लसैं बारां मासी।।
धर्म कर्म की तन पहरी चोली।
चन्द्र किरण सी मस्तक रोली।।

9

लता बेल फल फूल भरी झोली।
नक्षत्र तारे बेणी की मौली ।।
सुहाग भाग की नाथ संजोली।
गंग नीर में चुनड़ी धौली।।
गंगा यमुना गले की माला।
सात समुन्दर झलकत भाला।।
बंगाल बिहार घूमकर आई।
हरियाणे में बड़ी सजी सजाई।।

10

खेत खलियान देखकर आती।
फिर मन्डी में शोभा पाती।।
मंगला गौरी चढ़ी चित्ते पर।
दया दृष्टि हारे जीते पर।।
स्वर्ण सिंघासन शोभा पावै।
वायु व्यंजन करी चंवर ढुलावै।।
इन्द्र धनुष का शस्त्र धारै।
भगत हेतु दुष्टों को मारै।।

11

'जयन्ती' बन कर विजय दिलाती।
अड़े काम को स्वयं बनाती।।
'काली' बनकर संघार कराती।
दैत्य वंश को खोज मिटाती।।
'भद्रकाली' कल्याण कराए।
ऋद्धि सिद्धि घर में आए ।।
'कपाल मोचनी' ज्ञान बढ़ाए।
मुक्ति मार्ग स्वतः सुझाए ।।

'दुर्गा' बन कर दुर्ग बसा दे।
भूले भटके को राह दिखा दे।।
'क्षमा' याचना भय दोष मिटा दे।
पाप मिटाकर पुण्य बढ़ा दे।।
'शिवा' सहारा दुखी दीन का।
भाग जगा दे कर्म हीन का।।
'धात्री' बनकर भाग जगाती।
मंगला गौरी मंगल गाती।।

चुनाव विजय मंगला करावावै।
गौरी युद्ध में फतेह दिलावै।।
मंगलवार को मंगला गौरी।
पाठ करे जो छोरा छोरी।।
उस पर प्रसन्न मंगला होई।
तुरंत जगा दे किस्मत सोई।।
मंगला पाठ करे जो छात्र।
परीक्षा पास करै मां आतुर।।

14

अविवाहित का ब्याह रचावै।
उजड़े घर को पुनः बसावै।।
सुहाग मांग कन्या की भरवावै।
मन अनुकूल पति घर पावै।।
भूखे नर की भूख मिटावै।
दुखिया के दुख आप हटावै।।
प्रदेश गए को तुरंत बुलावै।
जो मंगला का पाठ करावै।।

15

विधि पूर्वक अनुष्ठान कराओ।
दहनी कूख में गर्भ भराओ।।
मंगला गौरी मंगल करणी।
भगत जनों के संकट हरणी।।
मंगल ग्रह को मंगला उतारै।
शनि नजर से गौरी उभारै।।
कृष्ण दत्त ग्रह गणित विचारै।
मंगला गौरी हिरदे में धारै।।

मंगला अष्टक योग

!! दोहा !!

अष्ट भुजा आठों दिशा-रक्षक आयुध आठ।
मंगला गौरी रक्षा करै-जो करै मंगला का पाठ।।
अष्ट दिशा में घूमती-रक्षक आठों याम।
मंगला गौरी रक्षा करै-सुमरों मंगला नाम।।
अष्ट भवन मन्दिर बना-बाजत ताल मृदंग।
मंगला गौरी रक्षा करै-जो सदा करै सत्संग।।

आठ भवन आठों कलश-आठों ध्वजा फहराई।
मंगला गौरी रक्षा करै-शत्रु को शीघ्र भगाई।।
माया मेधा मती मही-स्वाती शिवा संघारी।
मंगला गौरी रक्षा करै-शत्रु संघ बिडारी।।
तोमर मूसल गदा घनी-धनुष तीर तलवार।
मंगला गौरी रक्षा करै-जो गावै मंगला चार।।
भारत माता बन प्रकट हुई-सन सैंतालिस की साल।
मंगल गौरी रक्षा करे-हिन्द का ऊंचा भाल।।

18

मलेच्छ यवन का नाशकर आर्यावर्त महान्।
मंगला गौरी रक्षा करै-कवि वर करत बखान।।

इति अष्टक योग

अथः मंगलाष्टक श्लोक पाठ

पूर्व पश्चिम उत्तर यमी-बायब नेऋत ऐशान।
अग्नि कोण अष्टम दिशा-मंगला गौरी नमो नमः।।
कावेरी कृष्णा गोतमी-सरस्वती यमुना गंग।
गोदावरी अष्ट नर्मदा-मंगला गौरी नमो नमः।।

19

जांझन ताल मृदंग डफी-वीणा नाद तरंग।
अष्टम वंशी स्वर भरी-मंगला गौरी नमो नमः।।
लाल नील पीत हरित-श्वेत संधूरी सीप।
अष्टम रंग शुभ केसरी-मंगला गौरी नमो नमः।।
कनक ताम्र मूंगा रजत-कांसी अभ्रक लोह।
अष्टम धातु वज्र की-मंगला गौरी नमो नमः।।
अगर तगर चन्दन चरू-गूगल वाण मजीठ।
कपूर छार गन्धाष्टमी-मंगला गौरी नमो नमः।।

चला पांगा दृष्टया - चंचला चपला मीन।
टन टना टन लक्ष्मी - मंगला गौरी नमो नमः।।
च्यार वेद छः शास्त्र में बसत अठारां पुराण।
वेद व्यास की लेखनी- मंगला गौरी नमो नमः।।
पढ़ै लिखै कोई जपै सुनै-कथा भजन सत्संग।
कृष्ण कवि की कल्पना- मंगला गौरी नमो नमः।।

एवं मंगला गोर्यैः नमो नमः

।। इति मंगला गौरी पाठ सम्पूर्णम् ।।

आरती मंगला गौरी की

जय जय मंगला गौरी - मैया जय जय मंगला गौरी।
सात द्विप नौ खंड में - जय जय कार होरी।।

१. जग जननी जग माता - जग विस्तार करै।
मैया - जग विस्तार करै।।
पालन पोषण करती - फिर निस्तार करै।
जय जय मंगला गौरी।।

२ स्वर्ण सिंघासन बैठी - सिंघ असवार फिरै।
मैया - सिंघ असवार फिरै।।
अष्ट भुजी मां गौरी - ले हथियार फिरै।
जय जय मंगला गौरी।।

३ रमा राधिका श्यामा-नित नए रूप धरै।
मैया - नित नए रूप धरै।।
कभी गरमी कभी सरदी - कभी छाया धूप करै।
जय जय मंगला गौरी।।

४ रोग शोक को नासै - जग के कष्ट हरै।
मैया - जग के कष्ट हरै।।
धन योवन की दाता - तन को पुष्ट करै।
जय जय मंगला गौरी।।

५ हम सब दास हैं तेरे - हम पर दया करो।
मैया हम पर दया करो।।
श्रद्धा भगती दीजो - हिरदे ग्यान भरो।
जय जय मंगला गौरी।।

!! जानकारी !!

जो बालक मंगलिक हो - शत पाठ करो मन लाए।
गृहस्थ सुख पूरा मिले - मंगली दोष कट जाए।।
चौथे आठवें बारवें - सप्तम एक करूर।
सहस्र पाठ कराईए - मंगली दोष हो दूर।।
हरियाणे में प्रसिद्ध है - लदाना बाबा ग्राम।
सन् तिरासी से शुरू हुआ - गीता पंचांग निर्माण।।

।। बोलो मंगला गौरी माता की जै।।

मां मंगला सुनो विनय हमारी।
ऋण मोचन करो देओ कार सवारी॥
मंगलमयी हो आप हे मात मंगले।
सोया भाग जगाओ देओ कार बंगले॥
हे गोरी रूप माते मोहे निर्भय बनाओ।
चुनाव कोर्ट में मेरी विजय कराओ॥

इति प्रार्थना